PROJECT PROPOSAL

ON

RAWAT NACH MAHOTSAV

(A TRIBAL FOLK DANCE FESTIVAL OF CHHATTISGARH)

SUBMITTED TO

The Sectetary
Sangeet Natak Akademi
3rd floor Rabindra Bhawan
Opp. Mandi House Doordarshan Kendra
35 Ferozeshah Road
New Delhi – 110001

SUBMITTED BY

DR. KALICHARAN YADAV
RAWAT NACH MAHOTSAV SAMITEE
BANIYA PARA JUNA BILASPUR
BILASPUR CHHATTISGARH PIN 495001
MOB. NO. 98261-81513 , 07752-223206

(Dr. Kalicharan Yadav)
Secretary

History in Nutshell .....

Chhattisgarh is a new found state since the year 2000. Besides all Chhattisgarh is one of the largest producer of rice and has lot of ores preserved in it. It has been said with much truth that the soul of India lies in its villages because the country is essentially a country of agriculturists- so also cattle wealth being the prime requirement of agriculture. The cattlemen have continued to occupy an important place in Indian Society since antiquity. Also state of Chhattisgarh on its part being a hill and forest clad region, the area is conducive for the growth of rich cattle wealth. And engaged in this avocation is the ancient tribe of this region "Yadav" or "Raut" which is scattered all over Chhattisgarh and numbers about 30 lakh.

Rawat Nach .....

Bilaspur being the cultural nerve centre this region, each year after the festival of lights " Diwali " these gallant yadavas celebrate their folk dance festival with great mirth and merriment. And during this colourful dance festivity about six thousand Yadavas drawn from various rural areas of Chhattisgarh in glittering costumes in about hundred flocks congregate at the Divisional Headquarter Bilaspur to display their feats of skill and valour. On the appointed day which this year falls on 15th November 2014 every Yadav of a flock weilds a stick and a shield with ringing mini bells fastened to his feet. Thereafter dancing to the tune of the typical village bands, they like the warriors of the byegone ages engage themselves in exciting mock duels. In between they also recite the famous couplets of saints Soordas, Tulsidas and Kabir. Also a sea of rural and Urban humanity – men, women and children of all hues gather at Bilaspur to feast their eyes on this great yearly event totally forgetting their poor living conditions by submerging themselves in the prevailing joy and happiness. Then at the end of the dance festival a citizens committee awards shields and cash prizes to the excellent performers of the feats.

सचिव
रावत नाच महोत्सव समिति
बिलासपुर (छ.ग.)

This festival has, during previous years, the honour of having as its Chief guests the distinguished personalities like- The then Governor Hon'ble Kunwar Mehmood Ali Khan, Union Ministers Mr. Ramanand Yadav, Now Governor of M.P. Mr. Balram Singh Yadav and Mr. Arjun Singh . Several Ministers of M.P. Govt. as well both the C.M. of Chhattisgarh and other Ministers MP's and MLA's.

Historians and literary figures of Chhattisgarh trace the origin of the Raut Nach Festival to the good old days of Mahabharat when the autocratic and oppressive reign of King Kans was brought to an end the Yadavas under their unmatched leader Krishna celebrated the victory of good over evil and of justice over injustice.

This unique festival is also associated with the life giving paddy harvesting season of this rice bowle of Chhattisgarh and is akin to similar dance festivals of paddy growing Nagaland and the Bhangra dance of Punjab which is celebrated during the wheat harvesting season. Also to some extent it resembles the "Baredi" folk dance of Bundelkhan region Of M.P. State celebrated by "Ahirs" there after " Diwali" it also being an all male dance, the difference being that while it is performed in (batches) of Five to Ten persons, the Raut Nach is a mass dance.

Perviously an unruly tribe, this mass dance festival has brought about a sea change in the lifehabits of the "Yadavas" of this state and generated in this faction-ridden community a sense of brotherhood and discipline which was unheard of during the past generations. Not only that but this joy dance has also brought about unity in other people of diverse section of society who have started lending their wholehearted cooperation to this annual performance.

And it is because of this. Late Pandit Nehru had, while underlining the importance of folk dances, said that a folk dance is the manifestation of the joy and vitality of life.

सचिव
रावत नाच महोत्सव समिति
बिलासपुर (छ.ग.)

बिलासपुर का रावत नाच महोत्सव

भूमिका :

छत्तीसगढ़ के यदुवंशियों को राउत, रावत भी कहा जाता है। यादव एक श्रमशील, बहादुर जाति है। इनका नृत्य ''राउत-नाच'' पुरुषों द्वारा किया जाने वाला वीर रस से ओतप्रोत नृत्य है। इस नृत्य में महिलाओं की भागदारी नहीं होती। यह एक अलग बात है कि वादक दल का एक या अधिक सदस्य स्त्री वेश धारण कर नृत्य में भाग लेता है।

●

उद्‌गम :

छत्तीसगढ़ के विभिन्न अंचलों में रावत नाच अलग-अलग समय में सम्पन्न होता है। इस नृत्य के उद्‌गम के विषय में विद्वानों में मत भिन्नता है। विद्वानों का एक वर्ग इसे श्रीकृष्ण की लीलाओं से जोड़कर देखता है। उनमें भी श्री कृष्ण की लीला के अलग-अलग संदर्भों को उद्‌गम का स्त्रोत माना गया है-कुछ इसे गोवर्धन पूजा से उत्पन्न हुआ मानते हैं। वे अपने कथन की पुष्टि में श्रीमद्‌भागवत का उल्लेख करते हैं। गोपों के प्रमुख नंदबाबा भगवान इन्द्र को वर्षा कराने वाले देवता के रुप में पूजते थे। उनका मानना था कि वर्षा से ही हमारी प्रकृति का अस्तित्व है। समस्त प्राणियों को जीवित रहने के लिए अन्न,शुद्ध वायु-जल की प्राप्ति वर्षा से ही संभव है। वर्षा के देवता के प्रति आभार व्यक्त करने वे इन्द्र की पूजा को उचित मानते थे।

श्री कृष्ण ने इन्द्र पूजा का विरोध करते हुए उनके स्थान पर गिरीयज्ञ स्वरुप गोवर्धन पूजा प्रारंभ की। श्री कृष्ण ने वर्षा सहित वनस्पति, अन्न, वायु-जल प्रदान करने में गोवर्धन पर्वत की महत्वपूर्ण भूमिका को स्थापित किया। इससे नाराज इन्द्र ने ब्रज में घनघोर वर्षा की। श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत धारण कर ब्रजवासियों की रक्षा की। इन्द्र ने अपनी भूल स्वीकार करते हुए श्री कृष्ण से क्षमा याचना की। इस घटना के बाद ब्रज के ग्वालों ने अपना उमंग एवं उल्लास प्रकट करते हुए नृत्य किया। जिसकी स्मृति में रावत नाच किया जाता है।

कुछ श्री कृष्ण की रास-लीला के साथ, तो कुछ कंस एवं उसके श्वसुर जरासंध की श्री कृष्ण द्वारा किये गये वध के बाद मनायी गयी खुशियों के साथ इसे जोड़ कर देखते हैं।

छत्तीसगढ़ में रावत-नाच का समय-शरद काल का है। यह वह समय होता है जब धान की फसल पककर तैयार होती है। साथ ही नकदी फसल के आने का भी यह समय होता है। सब ओर फसल आने की खुशी रहती है। पंजाब का भाँगड़ा, असम का बीहू मनाये जाने के केन्द्र में भी अच्छी फसल की प्राप्ति की खुशी है। इस तरह भरपूर फसल की खुशी और ऋतु परिवर्तन रावत नाच के उद्‌गम के भौतिक कारण माने जा सकते हैं।

●

रावत नाच पर्व का समय :

छत्तीसगढ़ के रायपुर संभाग में रावत नाच का पर्व दीपावली-गोवर्धन पूजा के अवसर पर प्रारंभ होकर करीब 15 दिनों तक चलता है। इसे यहाँ मातर पर्व की संज्ञा दी गई है। जबकि बिलासपुर क्षेत्र में यह देवउठनी एकादशी से प्रारंभ

होकर एक पखवाड़े तक देवारी पर्व के नाम से मनाया जाता है और फिर बिलासपुर के सक्ती, जांजगीर, रायगढ़ क्षेत्रों में भी इसी अंतराल से मनाया जाता है। मुंगेली-लोरमी क्षेत्र में मातर मड़ई के रुप में यह पर्व और बाद में मनाया जाता है। रावत-नाच मनाने की काल अवधि में यह अंतर क्यों है? यह प्रश्न सम्यक विश्लेषण की मांग करता है। काल अवधि में अंतर का एक स्पष्ट कारण यह प्रतीत होता है कि यदि पूरे छत्तीसगढ़ में रावत नाच एक ही समय में मनाया जायेगा तो-(वादक दल) गड़वा बाजा की पूर्ति संभव नहीं होगी। सुविधा की दृष्टि से इसे एक-एक पखवाड़े के अंतराल में विभिन्न क्षेत्रों मनाने की परंपरा है।

बिलासपुर जिले में राउत नाच का पर्व प्रबोधनी एकादशी से शुरु होकर लगभग पन्द्रह दिनों तक चलता है। इस दौरान गाँव-गाँव में राउत नर्तकों की टोलियाँ अपने नृत्य का कलात्मक प्रदर्शन करती हैं। शहर के गली-मुहल्ले भी इनसे अछूते नहीं रहते। इस पर्व का समापन बिलासपुर में अरपा नदी के किनारे शनिचरी बाजार में आयोजित महोत्सव के साथ होता है। यहाँ इसे राउत-बाजार के नाम से जाना जाता है। शहर के बीचों-बीच स्थित इस बाजार में चारों ओर उपस्थित हजारों लोगों की उपस्थिति में क्षेत्र के यादव लोकनर्तकों की टोलियाँ अपनी नृत्यकला का मनोहारी प्रदर्शन करती हैं। अपनी परम्परागत वेशभूषा में सजे-धजे रावत नर्तक झूमते नाचते हुए दोहों का उच्चार करते हैं। लोक वाद्य की लय-ताल में उनके थिरकते पांवों और चलती हुई लाठियों के संतुलन को देखना एक रोमांचक अनुभव है। बीच-बीच में वे शस्त्र चालन कला का अद्‌भुत कौशल प्रदर्शित करते हैं। इस नृत्य रुप में श्रृंगार और वीरता का अनोखा तालमेल दिखाई देता है। लाठी, फरी एवं गुरूद इनके प्रमुख शस्त्र हैं।

●

कार्यक्रम स्थल :

हर वर्ष लालबहादुर शास्त्री शाला बिलासपुर का विशाल मैदान रंग-बिरंगे जन सैलाब से भर जाता है। महोत्सव का समय सूर्यास्त से पूरी रात रहता है। सारे छत्तीसगढ़ से लगभग छै हजार यादव नर्तक एक सौ दलों में समूहबद्ध हो क्रमशः प्रवेशद्वार से नृत्य-वृत्त में आते हैं और एक-एक कर लाइन में अपनी पारी आने पर अपना प्रदर्शन शुरू करते हैं। सांझ ढले बिजली जले इन दलों का क्रमशः प्रदर्शन शुरू होता है और ज्यों-ज्यों रात गहराती है दर्शकों की संख्या बढ़ती जाती है। निर्णायकगण इन दलों की प्रस्तुतियों को बड़ी बारीकी से परखते हैं और श्रेष्ठ दलों का चयन करते हैं। समापन समारोह में इनको पुरस्कृत तथा सम्मानित किया जाता है। स्थानीय प्रशासन का मानना है कि दर्शकों की संख्या एक लाख से कम नहीं होती।

●

श्रृंगार एवं अस्त्र-शस्त्र :

रावत-नाच में श्रृंगार और शौर्य का बहुत ही सुन्दर समन्वय होता है। इनकी साज-सज्जा और श्रृंगार बहुत ही आकर्षक होते हैं। इनके सिर पर धोती की पगड़ी बंधी होती है जो ''पागा'' कहलाती है। इसके ऊपर कागज के फूलों की लम्बी माला, गोलाकार कसी होती है। यह रंग-बिरंगी कागजों से बनी होती है। पगड़ी में मोरपंख से बनी कलगी होती है। कमीज के स्थान पर शरीर के ऊपरी हिस्से में रंग-बिरंगे कपड़े का सलूखा (जाकेट) पहने हैं और उसके ऊपर कौड़ियों की एक जाकिटनुमा पोशाक होती है जिसे यहाँ पेटी कहते हैं। यह प्रकाश में चमकती रहती है। दोनों बाहों में कौड़ियों का बना हुआ 'बंहकर' बंधा होता है। कमर के नीचे पहने वाले वस्त्र को 'चोलना' कहा जाता है जो रंगीन और आकर्षक

छींटदार कपड़े का होता है। इसे घुटनों के ऊपर कसकर पहना जाता है। रावत नर्तक कमर में बड़े-बड़े घुंघरूओं का बेल्ट बांधते हैं, इसे 'जलाजल' कहा जाता है। नाचते समय इन घुंघरूओं की आवाज बहुत ही कर्णप्रिय लगती है।

इनकी पूरी वेशभूषा एक कवच की तरह होती है। राउत नर्तकों के सीधे हाथ में लाठी और दूसरे हाथ में लोहे अथवा पीतल की एक ढाल होती है जिसे ''फरी'' कहते हैं। प्रायः यह लाठी तेंदू की होती है। इस प्रकार अपनी साज-सज्जा में राउत नर्तक एक योद्धा के समान दिखाई देता है। चेहरे को ये लोग वृन्दावन की पीली मिट्टी से रंगकर आकर्षक बनाते हैं। इस मिट्टी को 'रामरज' कहा जाता है। ये आँखों में काजल और माथे में चंदन का टीका लगाते हैं, दोनों गालों और ठोड़ी में काजल की बिंदिया लगी होती है। इस पूरी श्रृंगार प्रक्रिया के बाद रावत-नर्तकों का चेहरा बहुत ही सुन्दर दिखाई देता है।

●

लोक वाद्य :

राउत नाच में लोक वाद्यों का प्रयोग होता है। प्रत्येक दल के साथ लोक-वादकों का एक दल भी होता है जो प्रायः गंधर्व जाति के होते हैं। राउत नाच में प्रयुक्त होने वाले वाद्य यंत्रों में डफरा, मोहरी, निशान, टिमकी आदि प्रमुख हैं। प्रत्येक वादक दल के साथ एक या एक से अधिक व्यक्ति ''नर्तकी'' के रूप में रहता है। जिसकी वेशभूषा स्त्रियों की तरह होती है। इसे 'परी' कहते हैं।

●

दोहे :

रावत नर्तक-नृत्य के दौरान बीच-बीच में रुक कर दोहों का उच्चार करते हैं। ये आशुकवि होते हैं, ये दोहे इनके दैनिक जीवन के खट्टे-मीठे अनुभवों के जीवित प्रतिबिम्ब होते हैं। इनमें लोक जीवन की मिठास की सरल अभिव्यक्ति होती हैं। दोहों के माध्यम से ये लोकमंगल और लोक कल्याण के भावों को भी व्यक्त करते हैं जैसे-

''जइसन भइया लिये दिये
तइसन देबो असीस
अन-धन तुंहर घर भरे
जुग जियो लाख बरीस''

मड़ई :

राउत-नाच में ''मड़ई'' का उल्लेखनीय महत्व है। ''मड़ई'' को इसमें बहुत पवित्र स्थान प्राप्त है। ''मड़ई'' बांस से बनी लगभग 15 फुट ऊंची एक गोलाकार संरचना है। इसे ''गोंदईला''जंगली कंद की परतों से सजाया जाता है। बताया जाता है कि ''मड़ई'' का निर्माण बैगा द्वारा किया जाता है जो गोंड़ अथवा केंवट जाति के होते हैं। जब रावत नर्तक की टोली बाजार बिहाने अर्थात बाजार की परिक्रमा करते हुए नृत्य करती है तो एक सदस्य इसे लेकर नृत्य करता है। ''मड़ई'' का चलित रूप बिलासपुर जिले में पाया जाता है। जबकि अन्य स्थानों पर इसे स्थापित कर, इसकी परिक्रमा करते हुए राउत-नर्तक नाचते और शस्त्र का प्रदर्शन करते हैं।

●

कृषि संस्कृति :

अधिकांशतः रावत नर्तक कृषक होते हैं। उनके जीवन का मुख्य आधार कृषि एवं गौ-पालन है। प्रतिवर्ष खेती-किसानी के कार्य से अवकाश पाने पर इस नृत्य-पर्व के माध्यम से वे अपने आंतरिक उमंग और उल्लास को व्यक्त करते हैं। दैनिक जीवन की अनेकानेक प्रतिकूलताओं बावजूद अपने उत्सव के लिये वातावरण की निर्मिति उनकी जीजीविषा को ही रेखांकित करती है। इसके बाद भी यह नृत्य उनके लिए मात्र मनोरंजन का साधन भर नहीं है। वास्तव में पूरे एक पखवाड़े तक चलने वाला यह नृत्यकाल उनके लिए एक अनिवार्य कला-पर्व का दर्जा रखता है।

●

सोपान :

इस कलापर्व का अपना विधि-विधान है। इस पर्व का आरंभ से लेकर समापन तक विभिन्न सोपान होते हैं-जैसे अखरा, बाजा-लगाना, देवाला, काछन, सुहई, सुखधना, आशीष वचन, मड़ई, बाजार-बिहाना एवं बाजा-बिदा आदि।

●

रावत नाच इस अंचल की लोक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। यद्यपि इसमें यादव नर्तकों की ही प्रमुख भागीदारी होती है तथापि इस नृत्य में सामाजिक सरोकार एवं लोक-मंगल की भावना केन्द्र में है। इसीलिए रावत नाच धर्म जाति वर्ग भेद के बिना सभी के आंगन का नृत्य है। इस अंचल में स्थान-स्थान पर भरने वाले राउत बाजारों में जनता की बड़ी संख्या में उपस्थिति इसकी लोकप्रियता का प्रमाण है।

●

राउत बाजार से रावत नाच महोत्सव :

बिलासपुर शनिचरी राउत बाजार के विषय में एक बुजुर्ग रावत नर्तक श्री गेंदराम यादव कहते हैं-1978 के पहले अव्यवस्था का वातावरण रावत नर्तक-दलों की आपसी टकराहट और निजी शत्रुता प्रतिशोध और हिंसा का कारण बन जाती थी। यह अप्रत्यक्ष रुप से नर्तकों में स्थायी कटुता को जन्म देने लगा था। लोग इसे बदला चुकाने का अवसर समझने लगे थे। पारस्परिक टकराव अनेक समस्याओं को जन्म देने लगी थी। सबसे बड़ी समस्या एक जुझारू, कलाप्रिय और श्रमशील वर्ग की छवि खराब होने की थी। इस तनाव ने युदवंशियों के उमंग, जोश, श्रम और प्रतिष्ठा को कुंठित कर रहा था। उनकी कलात्मकता और सामूहिकता की भावना का लोप होने लगा था। इसके साथ ही बाजार में उपस्थित नर्तकों के लिए यह अनिवार्य था कि वे कोतवाली में उपस्थित हों और उनका मुखिया वहाँ अपना हस्ताक्षर करें, यह बड़ा अपमानजनक था। इन हिंसक घटनाओं के कारण कई दलों ने मुख्यालय के इस बाजार में आना ही छोड़ दिया था।

इन्हीं परिस्थितियों के बीच 1978 में कुछ उत्साही नवयुवकों ने इसे रावत नाच महोत्सव का रुप देकर व्यवस्थित किया। इससे यादवों में शत्रुतापूर्ण प्रतिशोध के स्थान पर स्वस्थ-प्रतिस्पर्धा का भाव विकसित हुआ। उनमें परस्पर भाई चारे की भावना का संचार हुआ। तब से रावत नाच महोत्सव का पूरी गरिमा और उत्साह के साथ आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। आज इस महोत्सव में 50 शील्ड्स के साथ दो लाख रुपये की धनराशि पुरस्कार के रुप में यदुवंशी नर्तकों को वितरित की जाती है।

आयोजन समिति के संस्थापक सदस्य श्री तिजऊ राम यादव का कहना है कि रावत नाच महोत्सव समिति द्वारा प्रतिवर्ष भाग लेने वाले दलों के लिए छः हजार भोजन पैकेट की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। मांग पर उन्हें आवास की सुविधा भी प्रदान की जाती है।

रावत नाच महोत्सव समिति को उसके सामाजिक सरोकारों के लिए भी जाना जाता है। समिति हर वर्ष लगभग सत्तर हजार रुपयों की नगद राशि रावत नाच महोत्सव छात्रवृत्ति के रुप में स्वजातीय छात्र-छात्राओं को प्रदान करती है। बिलासपुर यादव समाज के ''कृष्णाधाम'' छात्रावास के निर्माण के लिए समिति ने तीन लाख और सीपत में यादव छात्रावास के लिए पचास हजार रुपयों की राशि प्रदान की है।

आयोजन समिति द्वारा विगत 28 वर्षों से लोक संस्कृति पर एकाग्र वार्षिक पत्रिका ''मड़ई'' का निरंतर प्रकाशन किया जा रहा है। इसमें छत्तीसगढ़ के साथ-साथ पूरे देश की लोक संस्कृति से संबंधित सामग्री का संचयन किया जाता है। लोक संस्कृति से जुड़े सैद्धांतिक विमर्श को भी इस पत्रिका में पर्याप्त स्थान मिलता रहा है, फलतः इस पत्रिका का राष्ट्रीय स्वरुप बन गया है। (इसे ISSN नं. प्राप्त है।)

●

उपसंहार :

रावत नाच अपनी लोकप्रियता और जनाधार के कारण छत्तीसगढ़ में एक लोक पर्व के रुप में प्रतिष्ठित है। बिना किसी भेदभाव के वह समाज के सभी वर्गों को अपने साथ जोड़ता चलता है। अपनी व्यापकता में वह अंचल के पूरे ग्रामीण समाज को आंदोलित करता है। लोक मंगल और सामाजिक सद्भाव उसके केन्द्र में है। यह मानवीय संबंधों की जीवंतता को बचाये रखने और अपने लोक-सम्पर्कों का जीवित रखने का सहज और सरल माध्यम है।

जीवंत लोक के इस रावत नाच महोत्सव पर मीडिया ने ध्यान दिया। स्थानीय दैनिक समाचार पत्रों के साथ-साथ प्रमुख राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं ने जिसमें अहा जिंदगी, इंडिया टुडे, इंडिया न्यूज, केन्द्रीय सरकार की पत्रिका 'संस्कृति' आदि ने सराहा है। राष्ट्रीय अंग्रेजी दैनिकों ने फोटो सहित इसे प्रकाशित किया है। ''मड़ई''पर पूरे देश की पत्र-पत्रिकाओं ने समीक्षा प्रकाशित कर सराहना की है, ऐसा स्थान प्राप्त करने वाला यह छत्तीसगढ़ प्रदेश की संभवतः पहली एकमात्र पत्रिका है। ❑❑❑

गत वर्ष 86 दलों में लगभग छैः हजार नर्तकों ने कार्यक्रम में 15 नवम्बर 2014 को भाग लिया था। सोलह घंटे लगातार चलने वाली इस महोत्सव में प्रथम स्थान श्री केदारनाथ यादव, परसदा (भरनी), दूसरा (दो दलों को) श्री कृष्ण कुमार यादव दल, बसिया एवं श्री अमरनाथ यादव गोल, लटुवा-बलौदा बाजार, तीसरा (तीन दलों को) श्री सेवाराम यादव दल मोपका, श्री रतन यादव दल टिकरापारा, बिलासपुर एवं श्री रमेश यादव,डोंगरिया, रायपुर संभाग, चौथा (चार दलों को) श्री नत्थूलाल यादव, केकती, श्री द्वारिका यादव, खमतराई, श्री गौकरण यादव दल, सिरगिट्टी तारबाहर एवं श्री श्यामलाल यादव दल, सफेद खदान को सुपर रनिंग शील्ड्स के साथ भाग लेने वाले सभी दलों को लगभग 1 लाख 85 हजार रुपयों की राशि पुरस्कार स्वरुप अध्यक्ष -श्री कृष्णकुमार यादव के हाथों प्रदान की गयी।

इस वर्ष आगामी 5 दिसम्बर 2015 को 38वाँ रावत नाच महोत्सव आयोजित है। जिसमें करीब एक सौ दलों के आने की संभावना है।

रावत नाच महोत्सव 2014
बिलासपुर

(1)

लय, ताल, संगीत, दोहे नृत्य उल्लास, ये छ.ग. के लोक कलाकार हैं, और किया जाने वाला नृत्य रावत नाच है। ये यदुवंशियों का लोक पर्व है। संगीत, नृत्य और शारिरिक बल को प्रतिबिम्बित करता लोक-नृत्य। छ.ग. बिलासपुर के लाल बहादुर स्कूल के मैदान में ये रावत नाच महोत्सव है। कला के संवर्धन और संरक्षण का उत्सव। छ.ग. के मैदानी भागों में ये कला, आज समृद्ध है। इसमें इस महोत्सव की भी भागीदारी है। हर साल एक ही विधा के दस हजार कलाकार और एक ही विधा को देखने वाले एक लाख की संख्या में दर्शक एकत्र होना कलाकारों के लिए सालों लगातार प्रस्तुति करते रहने की प्रेरणा है

———(बाइट)———

इस लोकपर्व को मूलतः यादव समाज का कहा जाता है, पर इसमें भागीदार लोग इसे सर्वसमाज का बनाते हैं।

पर इसके आरंभ होने के संदर्भ में अलग-अलग मत हैं। पौराणिक रूप से कोई भी तर्क सही हो सकता है, पर ये जरूर है कि हमारी आस्था हमारे खेतों से लेकर लोक पर्व तक पहुँचती है। दूध उत्पादन के पशुओं से जुड़ा समाज, श्री कृष्ण से लेकर महाभारत तक जुड़ता है। नृत्य में सम्मिलित युद्ध कौशल इसका पर्याय है। नृत्य के बीच दोहे इसकी पुष्टि करते से ध्वनित होते हैं।

——— (बाइट) ———

छत्तीसगढ़ के २७ जिलों में साक्षरता शत-प्रतिशत न हो पर दोहे कहने और दोहे रचने की परम्परा इस लोक पर्व ने अपने आप में सम्हाल रखी है।

रचनाशील कलाकार इसमें कई और लोक प्रस्तुतियों के दोहे समाहित करते रहते हैं। कई कलाकार आशुकवि से हैं। प्रतियोगिता के समान दोहे पे दोहे कहते नजर आते हैं। समाज विशेष का प्रतिनिधित्व करती लोक कलाएं पीढ़ियों के बीच हस्तान्तरित होती हैं, पर बाजार, शहर, और शिक्षित समाज के गैर जरूरी प्रतीक हमेशा लोक के बीच आते रहते हैं। रावत नाच महोत्सव समिति * लोक नृत्य गीतों पर पड़ने वाले ग्रहण को हर साल धोती-पोंछती रहती है, इस महोत्सव के बहाने, क्योंकि इसमें हर वर्ग के शिक्षित-अशिक्षित कलाकार भाग लेते हैं, अपनी भावी पीढ़ी के साथ।

—— (बाइर) ——

रावत नाच की मूल प्रकृति में सामूहिकता है। ये लोक संस्कृति ग्राम से उपजी है और लोक चेतना को अभिव्यक्त करती है यादव नर्तक दल जब अपने मित्रों, परिचितों, पशुधन के स्वामियों के यहाँ जाते है, उनके आंगन या द्वार पर उनकी सांस्कृतिक प्रस्तुति खुशहाली का आशीर्वाद भी देती है।

——— (बाइट) ———

जाती धर्म सम्प्रदाय के आंगन के भेद के बिना ये पूर्णतः सद्भावना का सांस्कृतिक पर्व है। संस्कृति और सद्भावना पर आघात होता ही रहा है। शायद इस लोक महोत्सव के आरंभ होने का कारण, इस लोक संस्कृति को बुराइयों से बचाना भी रहा है।

——— (बाइट) ———

हमारी कोई भी एक कला कितनी कलाओं का पोषण करती है उसका प्रमाण ही है रावत नाच। शौर्य, नृत्य और दोहों को जिन वाद्य यंत्रों से बल मिलता है, वे दरअसल यादव समाज के नहीं बल्कि गंड़वा यानी गंधर्व जाति के लोग होते हैं। वाद्य यंत्रों को स्वयं बनाने वाली ये जाति निसान, टिमकी, डफरा, गुरदुम और मोहरी जैसे लोक वाद्य लिए होती है। इनके साथ इनका कॉन्ट्रेक्ट होता है, इसकी भी अपनी एक अलग संस्कृति है। और इसका आर्थिक पक्ष भी।

धमक और गमक के साथ सिर्फ शौर्य कौशल नहीं बल्कि शृंगार भी इसका महत्वपूर्ण पक्ष है। कलगी, पागा, पगड़ी माला, मोती, मोरपंख और चेहरे पर वृन्दावन की पीली मिट्टी जिसे 'रामरज' कहते हैं। काजल और आदिवासी

प्रतीक थोड़ी पर काली बिन्दियां, आस्था का प्रतीक चंदन का टीका।

रंगीन चमकदार वेशभूषा सलूखा, बास्किट, कौड़ियों का कवच, पेटी और बहकर।

कमर के नीचे पहने वस्त्र को चोलना कहते हैं। या इसकी जगह कसी हुई धोती होती है। जिसे बेट-कोर की धोती भी कहते हैं।

घुटने के ऊपर तक के परिधान श्रम शौर्य को इंगित करते हैं।

कमर पर घुंघरूओं से बनी बेल्ट जलाजल कहलाती है।

पैरों में घुंघरू भी होते हैं। जूता और रंगीन मोजा परिधान का परिष्कृत स्वरूप कहा जा सकता है जो फिटनेस, अनुशासन और एक-रूपता देता है।

श्रृंगार का एक और पक्ष इस नृत्य कौशल के बीच होता है

'परी', पुरुष कलाकारों द्वारा अभिनित महिला पात्रों को जीवंत करती नृत्यांगनाएं। हर क्षेत्र के लोक में पुरुषों का महिला पात्र बनना सहज रूप से आया है। रावत नाच भी उसमें से एक है।

——— (बाइट) ———

परि के चारों ओर नृत्य दल सशस्त्र होता है। यदुवंशी परम्परा का शौर्य इन्हीं शस्त्रों के संचालन से इस नाच में होता है। राउत नर्तकों के हाथ में तेंदू की लाठी अनिवार्य रूप से होती है। लाठी उनके पशु हांकने के काम के साथ भी जुड़ी होती है। लाठी पर लगा फुंदरा उसे अतिप्रिय होने के भाव से शृंगारित करता है। यही लाठी उनके शौर्य प्रदर्शन का जरिया भी होता है। हाथ में पीतल या लोहे से बनी ढाल होती है, जिसे इस लोक परम्परा में

'फरी' कहते हैं। हिरण के सिंग से बनी फरी को बगडिडोल कहते हैं। (8)
इसमें हिरण के सिंग जैसी आकृति होती है जो बग डिडोल कहलाता है।
किसी-किसी के पास 'गुरूद' नामक मारक शस्त्र भी होता है। ये (इसमें) एक फुट लंबे लोहे की छड़ में नीचे की ओर रिंग होता है, जिसमें लोहे की तीन चैन लटकी होती है, जिसके अंतिम सिरे में लोहे के गुटके होते हैं, निपुण कलाकार ही इसे चला सकता है।

—— (बाइर) ——

सामूहिकता का परिचय देता एक और आसितकता का प्रतीक इसमें इस्तेमाल किया जाता है 'मड़ई' जो कि बांस पर गोन्दहला नामक जंगली कंद की पंखुड़ियों से बनाया जाता है। महत्वपूर्ण ये कि छत्तीसगढ़ के केवट या गोड़ जाति के लोग इसे बनाते हैं। यानि ये लोकपर्व

अन्य जाति आस्था को भी बड़ी सरलता से समाहित करता है।

——— (ब्राइट) ———

मड़ई ध्वज का प्रतीक हो जाता है, बाजार बिहान की परम्परा में इसे लेकर बाज़ार के चारों ओर नृत्य परिक्रमा करते हैं।

——— (ब्राइट) ———

रावत नाच परम्परा घूम घूमकर नृत्य गीत की प्रस्तुति तो है ही पर यह महोत्सव सरी आयोजन इस घुमक्कड़ सांस्कृतिक प्रस्तुति को अपनी ओर भी लाता है। स्वस्फूर्त कलाकारों के एकत्र होने का और रसिकजनों के दर्शकों में होने का ये विशाल आयोजन है। और किसी जगह इस प्रक्रिया में इतने लोग एकत्र होते हैं ऐसा कोई और

प्रमाण अब तक नहीं हैं। इसलिए ये विशाल आयोजन लोक कला का संरक्षक भी है।

—— (बाइट) ——

स्वरूप, प्रतियोगिता का भले हो पर नियमावली उसके मूल स्वरूप को कायम रखने की ही है। वहीं ~~प्रया~~ इस आयोजन में प्रयोगधर्मिता को लिए हुए प्रस्तुतियों का स्वागत भी है। पर आंकलन व श्रेणीबद्ध किए जाने का पैमाना मौलिक लोक तत्व ही हैं।

—— (बाइट) ——

हमारे लोकपर्व खेतों से जुड़े हैं फसल काटने के समय दीपावली और एकादशी से जुड़ा ये पर्व यदुवंशियों की पहचान है। ग्रामीण समाज का उत्सव और लोक परम्परा का संवाहक है ये लोक पर्व।

—— x ——